

श्री नर्मदा अष्टक | By Ravinder Sharma |

नमो नर्मदाये निजानंदाये
नमः शर्मदाये शमतर्पिताये
नमो वर्मदाये वर्णवेति राये
नमो हर्म्यदाये हरमगर्शिताये

सबिंदु सिन्धु सुस्खल तरंग भंग रंजितम् ।
द्विषत्सु पाप जात जात कारि वारि संयुतम् ॥
कृतान्त दूत काल भूत भीति हारी वर्मदे ।
त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे

त्वदम्बु लीन दीन मीन दिव्य सम्प्रदायकम्
कलौ मलौघ भारहारि सर्वतीर्थ नायकं ॥
सुमसत्य कच्छ नक्र चक्र चक्रवाक शर्मदे ।
त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे

महागभीर नीर पूर पाप धूत भूतलं ।
ध्वनत समस्त पातकारि दरितापदाचलम् ॥
जगल्लये महाभये मृकुण्डसुनु हर्म्यदे ।
त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे

गतं तदैव मे भयं त्वदम्बु वीक्षितं यदा ।
मृकुण्डसूनु शौनका सुरारी सेवी सर्वदा ॥
पुनर्भवाब्धि जनमज भवाब्धि दुख वर्मदे ।
त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे

अलक्ष लक्ष किन्न रामरासुरादि पूजितं ।
सुलक्ष नीर तीर धीर पक्षी लक्ष कूजितम् ॥
वसिष्ठ शिष्ट पिप्पलाद कर्दमादि शर्मदे ।
त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे

सनत्कुमार नाचिकेत कश्यपात्रि षटपदैः ।
धृतं स्वकीय मानसेषु नारदादि षटपदैः ॥
रविन्दु रन्ति देव देव राजकर्म शर्मदे ।
त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे

अलक्ष लक्ष लक्षपाप लक्ष सार सायुधं ।
ततस्तु जीव जंतु तंतु भुक्ति मुक्ति दायकं ॥
विरञ्चि विष्णु शंकरं स्वकीय धाम वर्मदे ।
त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे

अहो धृतं स्वनं श्रुतं महेशिकेश जातटे ।
किरात सूत वाडवेषु पण्डिते शठे नटे ॥
दुरन्त पाप ताप हारि सर्वजंतु शर्मदे ।
त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे

[%e0%a4%85%e0%a4%b7%e0%a5%8d%e0%a4%9f%e0%a4%95-by-ravinder-sharma/](#)